डिग्निटी डायरीज 21

2020 सीखने और कुछ सीखों को भुला देने का वर्ष

जनवरी 1, 2021

महामारी और चक्रवात अम्फान, निसर्ग तथा देश भर में भारी बाढ़ की तरह अन्य आपदाओं के पिछले एक साल की सीखो को ध्यान में रख 2021 की ओर बढ़ते हुए 'डिग्निटी डायरीज ' के इस विशेष संस्करण में कुछ सीख और व्यापक कामों के बारे में संक्षेप वर्णन है। बुनियादी अस्तित्व और आजीविका पर ध्यान केंद्रित करने के साथ साथ हमने आपदाओं पर तेजी से प्रतिक्रिया के लिए, गूँज अलायन्स फॉर रैपिड रिस्पांस ऑन डिसास्टर्स (GARRD) भी बनाया। इसलिए 2020 चुनौतियों वर्ष रहा, परन्तु इसने हमे परिस्थितियों के अनुकूल बदलने और उनसे उभर कर आने के लिए भी प्रेरित किया, और जितना काम पहले एक साल में हुआ करता था वह हमने 8-9 महीने में किया है। इस प्रकार इस वर्ष ने हमें भविष्य की आपदाओं के लिए मजबूत और अधिक तैयार किया है।

हमारे 10 शीर्ष सबक

- प्रयासों, सामग्री वितरण, मास्क उत्पादन आदि के पूर्ण स्थानीयकरण और विकेंद्रीकरण ने, पैमाना, प्रसार और त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित की। किसानों से थोक खरीद ने भी महत्वपूर्ण नकदी प्रवाह, आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करना सुनिश्चित किया; जो कि आपदा से बाहर आने, पलायन रोकने और गरीबी समाप्त करने का एक मात्र रास्ता है।

- कारीगरों, यौनकर्मियों और विकलांगों जैसे कुछ पूरी तरह से उपेक्षित समुदायों के ऊपर अधिक ध्यान देना और उनके लिए अधिक काम करना। महामारी ने आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य के मामले में उनकी पीड़ा एक अकल्पनीय स्तर पर बढ़ा दी।

- गरिमामय आजीविका के लिए, इस बात को मूल्य देना आवश्यक है कि लोगों को स्वयं के हित की कितनी जानकारी है और उनकी क्या अभिलाषाएं है। किसी व्यक्ति के कौशल, क्षमताओं को उसके समुदाय की जरूरतों से जोड़ना चाहिए।

- प्राप्तकर्ता की गरिमा पर ध्यान दिए बिना कोई विकास या राहत पुनर्वसन नहीं। कोई भी पीड़ित या दान का प्राप्तकर्ता नहीं बनना चाहता। इस बात को हमारे कार्यक्रम के डिजाइन और गतिविधियों के प्रमुख निर्धारक के रूप में बनाए रखें।

- महामारी ने सभी को सामान रूप से प्रभावित नहीं किया; ग्रामीण भारत जो संसाधन और अवसरों में पहले से ही पिछड़ा था, उसने इस दौरान और भी बदतर समय देखा। भारत के कई हिस्सों में भारी बाढ़ और चक्रवातों ने इन लोगों को और अधिक असुरक्षित बना दिया, जिससे व्याप्त असमानता और गरीबी और बढ़ गई।

- आपदा की प्रतिक्रिया में किया गया कार्य गैर आपदा समय में और अधिक किया जाना चाहिए, समुदायों को तैयार करना, संसाधनों को संगठित करना और लोगों की सशक्त मानसिकता पर काम करना।

- महिलाएं आपदाओं में सबसे ज्यादा प्रभावित होती हैं; ग्रामीण भारत में महिलाएं वहीं रह जाती हैं जबकि पुरुष काम के लिए पलायन कर लेते है, या फिर महिलाओं को शहरों से गांव वापस चल के जाना पड़ा या महिलाओं को लॉकडाउन और बड़ी आर्थिक मंदी के दौरान अपनी स्वतंत्रता और आर्थिक ठहराव खोना पड़ा। ऐसे में महिलाओं के साथ हमारा और तेज और मजबूत हो गया।

- एक परिवार की जरूरतों के लिए अनुकूल और मानकीकृत राहत किट; एक परिवार के लिए जूते, कपड़े, सैनिटरी पैड, सूखा राशन आदि जैसी बुनियादी जरूरतों वाली सामग्री के साथ मानकीकृत। (लेकिन जूते, कपड़े, शुष्क राशन आदि उस जगह के भौगोलिक, मौसम, सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंडों के आधार पर चयनित)

- ग्रामीण समुदायों में बेहतर पोषण के लिए रसोई उद्यान सबसे अच्छा जरिया है, जो कि आँगनवाड़ी और स्कूलों में बेहतर मिड डे मील भी सुनिश्चित करता है। वे कोविद जैसी आपदाओं के समय भरण-पोषण एवं जीविका का भी जरिया हैं।
- ग्रामीण भारत के लिए ग्रामीण उत्पाद - समय की मांग है कि गांव के कारीगरों, शिल्पकारों,किसानों आदि को उनके प्रयासों और ज्ञान में सम्मान और मूल्य की भावना के साथ उन्हें और अधिक आत्मनिर्भर बनाएं।

हमारे 10 शीर्ष नंबर

कुल परिवारों तक पहुंच - 307,000+

तैयार भोजन चैनलाइज़ किया गया - 158,000+

राशन और अन्य आवश्यक सामग्री पहुंचाई गयी - 4,900,000+ किलोग्राम

किसानो से सीधे तौर पर फल और सब्जियाँ खरीदी गयी - 208,000+ किलोग्राम

कुल डिग्निटी फॉर वर्क (DFW) गतिविधियों का आयोजन - 4,500+

फेस मास्क बनाये गए - 680,000

MYPADS (कपडे से बने सैनिटरी पैड) बनाये गए - 704,000

एनजेपीसी सत्र में महिला प्रतिभागी - 15,000+

सहयोगी संस्थाओं के साथ भागीदारी - 450+

कुल राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशो तक पहुंच - 26

हमारे 10 बेहतरीन क्षण

- राजस्थान के उदयपुर जिले के अलशिगड़ गांव में पौधरोपण अभियान
- वापसी पहल के तहत केरल के इडुक्की जिले में पेरियार घाटी में आत्म-निर्वाह के लिए पोषण उद्यान
- दिल्ली की 'नॉट जस्ट ए पीस ऑफ़ क्लॉथ' (एनजेपीसी) इकाई में तैयार किया जा रहा MyPad पैक
- डीएफडब्ल्यू पहल के तहत झारखंड के हजारीबाग के बघानी टोला बांका में बना बांस का पुल
- वापसी (आजीविका)पहल के तहत बीड (महाराष्ट्र) के स्थानीय समुदायों के साथ सामुदायिक खेती
- बिहार बाढ़ के दौरान तत्काल बाढ़ राहत कार्य को अंजाम देने के लिए जमीनी स्तर पर जुटी हमारी टीम
- चमोली उत्तराखंड में 'शारीरिक दूरी' को ध्यान में रखते हुए राहत कोविड किट वितरण

- ज़ेड.पी. स्कूल लातूर महाराष्ट्र में राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन से पहले - एकदूसरे से सीखना और आपसी सद्भाव बढ़ाना
- डीएफडब्ल्यू परियोजना के तहत ओडिशा के जगतसिंहपुर जिले के बिरदी प्रखंड में बना किचन गार्डन
- ओडिशा के केंद्रपाड़ा में घरभंगा जेनसाही गांव में हस्तकला के सहारे स्थायित्व

कार्य क्षेत्र से 10 कहानियां

कर्नाटक में टमाटर उत्पादक किसानों की हताशा का हल

गूँज कोलार के किसानों से सीधे थोक में टमाटर की फसल खरीद रहा है, इन टमाटर को अन्य सब्जियों के साथ क्षेत्र में हमारे राशन किट में शामिल किया जा रहा है। कारण? कर्नाटक में कोलार की जमीन अपने खदान क्षेत्रो तथा टमाटर जैसी फसल की खेती के लिये 'भारत की स्वर्ण भूमि' के नाम से विख्यात है। इस समूचे क्षेत्र में सालाना लगभग 4 लाख टन टमाटर की पैदावार होती है। साल के इस समय प्रतिवर्ष देश विदेश में व्यापक तौर पर टमाटर भेजा जाता है जिससे किसानों को केवल तीन चार महीने की मेहनत में प्रति एकड़ 1 लाख की लागत पर 5 लाख रूपये तक की आय होती है। जिससे शेष वर्ष के लिए किसान की स्तिथि सामान्य बनी रहती है। लेकिन इस साल अचानक लॉक डाउन हो जाने से टमाटर की 90% उपज को आगे नहीं बेचा जा सका तथा किसान इसे बहुत कम दर पर बेचने के लिए बाध्य हो गए। हताश होकर कई किसानों ने अपनी उपज को ऐसे ही नष्ट कर दिया। गूँज द्वारा किसानों से सीधे टमाटर खरीदने से उन्हें उनकी उपज का मूल्य मिल रहा है तथा राशन किट के साथ भेजने पर स्थानीय लोगो को अतिरिक्त पोषण मिल रहा है...इस प्रक्रिया में उपज को मंडियों तक पहुँचाने के खर्च में भी कमी आयी है।

बिहार में कुष्ठ रोगी बस्ती - बहिष्कार तथा भूख से जूझती

“मांगने को निकलते है चौक पर, बाजार में, गाँव में, मगर मार कर निकाल देते है” यह कहानी उन लोगो पर प्रकाश डालती है जिनपर लॉक डाउन और कोविद महामारी की दोहरी मार पड़ी है। बिहार के मरजादवा गाँव (मैनाटाड ब्लॉक पश्चिमी चम्पारण) में कुष्ठ रोग पीड़ित परिवारों की एक बस्ती है, जो मुख्य सामाजिक समूह से दूर स्थित है। यह मुख्य रूप से भीख मांगने और कूड़ा बीनने जैसे कामो पर निर्भर है तथा अपना जीवनयापन कर रहे है। हालांकि लॉक डाउन के पहले से ही वे हाशिये

पर थे लेकिन इस दौरान उनकी स्तिथि पहले से ज्यादा ख़राब हो गयी है. वे बुनियादी जरूरतों जैसे रोज के भोजन के लिए भी संघर्ष कर रहे है। “पहले दो-चार रूपये मिल जाते थे अब वो भी मुश्किल है” ग्रामीणजन को ऐसी गलत धारणा है कि इस बस्ती में रहने वाले लोग ही 'कोरोना वायरस' फैला रहे है। लोग उन पर पथराव भी कर रहे है, अब डर के कारण कई दिनों से इन परिवारों ने बाहर कदम भी नहीं रखा है, जिसके परिणाम स्वरुप वह अन्न के बिना केवल नमक पर जीवन यापन करने को मजबूर हैं।

ग्रामीणों द्वारा तैयार सामान ग्रामीण भारत के लिए - बुन्देलखण्ड से एक उदाहरण

बुंदेलखण्ड के लोग लंबे समय से जल संकट से जूझ रहे है। इस लॉकडाउन के समय में, हमारी टीम ललितपुर जिले में दिहाड़ी मजदूरी पर काम करने वाले किसानों, बुनकरों तथा पशुपालकों के साथ काम कर रही है, जो इस समय काम ना मिलने तथा पहले से तैयार माल को ना बेच पाने के कारण हताश हैं। उन तक राशन किट पहुँचाने के दौरान उन्हें हमारी टीम की ओर से टोकरी तथा पंखे बनाने के लये प्रेरित किया गया और उन्हें उसका भुगतान किया गया। ग्रामीणों ने तुरंत ही 1 हफ्ते के भीतर तैयार करने के वादे के साथ, 200 टोकरी तथा 200 पंखे बनाने का काम शुरू कर दिया। यह उत्पाद हमारे राहत किट में शामिल किए जाएंगे। गूँज 2016 से बुंदेलखण्ड के अलग-अलग जिलों में, स्थानीय समस्याओं का समाधान स्थानीय समुदायों को प्रेरित कर उन्ही के द्वारा करवा रहा है।

दृढ़ संकल्प विनाश के बीच रास्ता दिखाता है

"अगर हमारे गाँव में कोई आपात स्थिति होती, तो हम पूरी तरह से फंस जाते... और आज की परिस्थितियों को देखते हुए, आपात स्थिति कभी भी हो सकती है”, महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के चक्रवात निसर्ग प्रभावित बंदरवाड़ी गांव के निवासी निकेतन कहते हैं। यह उनका स्वभाव था और थोड़ी गूँज की प्रेरणा थी जिससे उन्होंने अपने गांव के निवासियों को अपनी मुख्य सड़क, जो पूरी तरह से चक्रवात के मलबे से ढकी हुई थी, की सफाई की दिशा में हमारी 'डिग्निटी फॉर वर्क' (DFW) पहल के तहत काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। निसर्ग ने रत्नागिरि के एक बड़े हिस्से को छिन्न-भिन्न कर दिया था, छते ढह गयी और 6 लाख से अधिक पेड़ों को जमींदोज कर दिया, इसने इस क्षेत्र को शेष जिले से अलग कर दिया। हालांकि, स्थानीय लोगों ने मुख्य भूमि तक अपनी पहुंच हासिल करने के लिए उत्साह के साथ, गिरे हुए पेड़ों को काटा और केवल अपनी कुल्हाड़ियों, आरी और रस्सियों का उपयोग कर पेड़ के भारी तनों को स्थानांतरित कर दिया। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, बाद में उन तक राहत आसानी से पहुंच स्की।

वास्तव में, गूँज की गाड़ियों को राहत सामग्री और राहत किट को उसी मरम्मत वाली सड़क से गुजरते हुए देखने पर स्थानीय लोगों को उस पहल की अहमियत नज़र आयी और उन्हें समझ आया की उन्होंने क्या पाया है।

समय पर सिलाई: छत्तीसगढ़ में बैग बनाना

छत्तीसगढ़: छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के गोबरसिंह गाँव में, राहत सामग्री पैक करने के लिए बार-बार बोरियाँ खरीदनी पड़ रही थी, ऐसे में हमारी टीम ने स्थानीय गांव समुदाय को राहत सामग्री की सुरक्षित पैकिंग के लिए कपडे के बैग बनाने के लिए प्रेरित किया। सिर्फ एक महिला के साथ शुरू हुई पहल और आगे बढ़ी जब दो और महिलाए कपडे के बैग की सिलाई के काम में शामिल हो गयी। गाँव में ही आजीविका उत्पन्न करने के प्रयास के अलावा, इस्तेमाल किये गए कपड़े की थैलियों ने ग्रामीणों को इसकी उपयोगिता को एक नई निगाह से देखने का अवसर दिया।

बिहार में कर्ज के जाल से मुक्त

"बाबू कर्ज में डूबे जीवन में कोई राहत नहीं है," सौहाग्य ने उनके कृषि मजदूरी के सम्बन्ध में बात करने पर बताया। हालांकि, सुजनि बनाने के काम के कारण उनके जीवन में बदलाव आया है। होने वाली कमाई से उत्साहित होकर उन्होंने अपनी बहू को इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित किया। अब घर की दोनों महिलाओं ने अपने परिवार को कर्ज के जाल से मुक्त करने की शुरूआत कर दी है।

मछली पालन: झारखंड में एक पहल...

जबकि कई लोगों ने इस बारे में सोचा कि क्या स्थानीय ज्ञान और संसाधन गांवों में आजीविका उत्पादन के आत्मनिर्भर मॉडल बनाने में सक्षम हो सकते हैं, हमारी टीमों इसपर काम किया। बोकारो जिले के गोमिया क्षेत्र में लॉकडाउन के बाद आए लोगों के लिए आजीविका एक चुनौती बन गयी। उस समय गूँज ने जन सहयोग केन्द्र हजारीबाग के साथ साझेदारी की और लोगों को मत्स्य पालन करने के लिए प्रेरित किया तथा लोगों के साथ मिलकर ग्राम तालाब में इसकी स्थापना की। इसे सफल बनाने के लिए प्रत्येक समूह को मछली के अंडे दिए गए। एक प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित किया गया जिसमें स्थानीय विशेषज्ञों द्वारा मछली पालन के पारंपरिक तरीकों के बारे में अपने ज्ञान का आदान-प्रदान किया जाता था। इसके अलावा, गूँज की टीम स्थानीय

लोगों के साथ वनस्पति कृषि स्थापित करने का काम कर रही है ताकि उनके लिए आजीविका के वैकल्पिक साधन सम्भव हो सकें।

मूंगफली खरीद के साथ गुणवत्ता सुनिश्चित करना

ओडिशा के बालासोर और मयूरभंज जिलों में ग्रामीणों के सीमांत और छोटे किसान होने के कारण उन्हें महामारी की शुरुआत के बाद से मूंगफली की बिक्री में परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। गूँज ने अपने वापसी अभियान के अंतर्गत परिवारों की सहायता करने के लिए मूंगफली की खरीद की जिसे गूँज सहायता किट मे शामिल किया। इस क्षेत्र में कोविड के दौरान राहत कार्य करने गई गूँज टीम कैमिकल मुक्त और बेहतर गुणवत्ता वाली मूंगफली का उत्पादन देख आश्चर्यचकित थी परंतु इतनी अच्छी गुणवत्ता वाली मूँगफली को किसानो को बहुत कम कीमतों पर बेचना पड़ रहा था जो कि दुखद था. इसीलिए गूँज ने अपनी सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर स्थानीय लोगों से कच्ची और ताजा मूंगफली अच्छी कीमत पर खरीदने का निर्णय लिया ताकि उनके लिए स्थायी आजीविका विकल्प तैयार किया जा सके।

जीवन में बदलाव ला रही सामुदायिक खेती

पलक्कड़ जिले के पलसैना गांव में सामुदायिक कृषि परियोजनाएं स्थानीय महिलाओं के जीवन और भविष्य को बदलती रही हैं। सिलाई की दुकानों में अपनी नौकरी गंवाने और विभिन्न स्थानों पर दैनिक श्रमिकों के रूप में काम करने की मशक्कत के बीच जब कोविड ने उन्हें पैसे कमाने के सभी अवसरों से वंचित कर दिया तो वे काफी निराश हो गयी, परंतु गूँज द्वारा थोड़ी प्रेरणा और प्रोत्साहन के साथ उन्होंने वापस बंजर ज़मीन के टुकड़ो की ओर रुख किया। आज वे महिलाएं बैंगन, भिंडी, टमाटर, ककड़ी आदि जैसी सब्जियों की जैविक पैदावार कर रहीं हैं, जो पूरे गांव में सभी की पसंदीदा बन गई हैं। हर सुबह लोग ताजा पालक और बीन्स लेने आते हैं जिसका अलग ही आनंद है। पांच महिलाओं में से एक थन्कम्मा जी का कहना है, "कभी कभी हमे मुश्किल होती है सब्जियों को बेचने में लेकिन ज्यादातर दिन हम अधिक मांग के कारण लोगों की जरूरत पूरी भी नहीं कर पाते।"

महाराष्ट्र में उम्मीद पैदा करना

हर मानसून में महाराष्ट्र के पालघर में गुंडेल गांव के डिजिपाड़ा के परिवार सूर्या नदी की बाढ़ के कारण खुद को फंसा हुआ पाते थे। कई बार आपात स्थिति के दौरान अस्पताल पहुंचने के लिए

उन्हें जंगलों से होकर मुश्किल रास्तों पर जाना पड़ता था। रहवासी काम पर नहीं जा सकते थे और बच्चे पूरे एक पखवाड़े तक स्कूल छोड़ने को मजबूर हो जाते थे। थोड़े प्रोत्साहन के साथ स्थानीय निवासियों ने एकजुट होकर लकड़ी का पुल बनाया। दो दिन की मेहनत के बाद उन्होंने 35 फीट लंबा, 3 फीट चौड़ा और 10 फीट ऊंचा ढांचा खड़ा किया। इस पुल ने न केवल निवासियों को शेष क्षेत्र में फिर से जोड़ा, बल्कि समुदाय के भीतर एकता और सशक्तिकरण की भावना को भी फिर से जोड़ा।

<u>महाराष्ट्र में पुल निर्माण कार्य</u>

पालघर ज़िले में दिगीपाडा और गून्डाले गांव के 8 परिवारों को हर साल सूर्य नदी में आये उफ़ान के रूप में मॉनसूनी वर्षा की मार झेलनी पड़ती है। बहुत बार इनको आपातकालीन परिस्थिति में अस्पताल पहुँचने के लिए जंगल के बीच से असहनीय लंबे रास्तो से होकर गुजरना पड़ता था।

पूरे पंद्रह दिन तक स्थानीय निवासी अपने कार्य क्षेत्र तक नहीं पहुंच पाते व बच्चों को स्कूल से वंचित रहना पड़ता था। 22 ग्रामीण साथ आए और लकड़ी का पुल बनाने का कार्य किया। 2 दिन के श्रम के पश्चात उन्होंने 35 फुट लम्बा, 3 फुट चौड़ा और 10 फुट ऊँचा पुल तैयार किया। इस पुल ने ना सिर्फ लोगों को दूसरे इलाकों के साथ जोड़ा बल्कि सभी ग्रामीणों मे एकता और सशक्तिकरण की भावना को भी जागृत किया।

हम निरंतर कार्यरत हैं...

<u>हमारा साथ दें:</u>

- सामग्री सहयोग के रूप में - https://bit.ly/2yR000h
- राशि सहयोग के लिये - goonj.org/donate
- गूँज के लिए फण्ड रेजिंग कैंपेन शुरू करने के लिए हमे jibin@goonj.org पर मेल करे।

हमारी 2020 ग्राउंड रिपोर्ट यात्रा पढ़ने के लिए: <u>https://goonj.org/dignitydiaries/</u>

<u>संपर्क करे :</u>

मुख्यालय : J-93, सरिता विहार, नई दिल्ली - 76

011-26972351/41401216

www.goonj.org

mail@goonj.org